بسم الله الرحمن الرحيم

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

"अल्लाह और उसके उपदेश को धन्यवाद देते हुए "(भाग १)।"

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

13 April 2018 (25 Rajab 1439 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों,(और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **"अल्लाह और उसके उपदेश को धन्यवाद देते हुए "(भाग १)।**

अल्लाह की कृपा से पिछले चार-पाँच वर्षों से दुनिया के विभिन्न देशों में मेरा पर्यटन और विशेष कार्य सफल हुए है। इतना की अल्लाह के प्रति एहसानमन्द और प्रशंसा के साथ मेरा दिल भर आया। दिव्य अभिव्यक्ति के पुरुषों के साथ ही, महिलाओं ने भी एक महान भूमिका निभाई है, अल्लाह के कार्य में मदद करने के लिए अपने समय का त्याग और अपने ईश्वरीय ज्ञान का उपयोग कर रहे हैं।सिवाय इसके, विभिन्न देशों में दावा /तब्लीक की गतिवृद्धि के साथ, विशेष रूप से भारत और अफ्रीका में, बहुत सारी महिलाओं ने ईश्वरीय घोषणापत्र के समय की सच्चाई और खलीफातुल्ला को अपनाया है,अल्लाह से आने वाले सत्य की खातिर माता-पिता और पहले के समुदायों, पतियों के संकीर्ण विचारों और क्रोध का निरादर किया है। एक स्वाभाविक दुआ उन महिलाओं के लिए मेरे दिल से निकलता है जो जमात उल साहिह अल इस्लाम में शामिल हुई हैं, जिसने अल्लाह से पूरी विनम्रता व्यक्त की और उसके दूत पर और इस तरह उनकी पारस्परिक संविदा (ब्यत) के प्रति निष्ठा और विश्वासपूर्वक तेज़ी से खड़े हुए।

अल्हम्दुलिल्लाह मुझे विभिन्न देशों से रोज़ कई ईमेल आते हैं और कई महिलाएं बहुत भावुक और दिव्य संदेश की ग्रहणशील थीं और दिल को छू लेने वाले सभी एहसानों और सभी संकेतों के लिए जो उसने मेरे समर्थन में प्रकट किया है, मैं अल्लाह (स व त) को धन्यवाद देने से खुद को शामिल नहीं कर सकता था, और अनुतापी की ओर से असीम प्रार्थना, जो खुद को सुधारना चाहते हैं, और अपने जीवन को सर्वोत्तम में बदलना चाहते हैं। ये महिलाएं दिव्य जल में इतनी मग्न हैं कि वे अल्लाह के इष्ट और चमत्कार को प्राप्त करने वालों में से हैं (वे चमत्कार और दुआ की शक्ति के साक्षी हैं जो अल्लाह को सम्बोधित है) और वे जिस भी तरह से वे कर सकते हैं ,कभी भी अल्लाह के कार्य में मदद करने के लिए तैयार रहते हैं । कुछ अनुवाद कार्य करते हैं, दावा / तब्लीक करते हैं, अपने बच्चों को इस्लाम की सही शिक्षा देते हैं और अपने पति और माता-पिता का समर्थन अल्लाह के कार्य का समर्थन करने के लिए करते हैं। उनमें से जिनके पास अपने परिवार का समर्थन नहीं है वे अल्लाह पर इतना भरोसा करते हैं की अल्लाह खुद को असाधारण तरीकों से प्रकट करता है, जिससे अल्लाह के कार्य में मदद करने के लिए उन्हें साहस और धैर्य मिलता है,जमात उल साहिह अल इस्लाम को आगे बढ़ने में मदद करते है। इस मामले की सच्चाई यह है कि जमात उल साहिह अल इस्लाम की महिलाएं इसमें एक नए अध्याय को शामिल करती हैं, मानव जाति और जमात उल साहिह अल इस्लाम के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में

लिखा गया है। वे एक ताजा / ठंडी हवा की तरह होते हैं जो एक गर्म मौसम से आगे निकल जाता है, लोगों के लिए आशा की किरण और अल्लाह और उसके दूत से उसे मिलने वाले संदेश को लातें है।

एक राष्ट्र के इतिहास में ऐसे समय होते हैं जिस ओर अक्सर किसी का ध्यान नहीं जाता हैं, लेकिन बाद में राष्ट्रीय अभिलेखागार में कीमती खजाने के रूप में दर्ज और संरक्षित होते हैं।

धार्मिक समुदाय जब अपने इतिहास में नए अध्याय को जोड़ते हैं या पुराने संसर्ग का नवीनीकरण करते हैं वे बाहरी साधनों द्वारा किये गए सराहना या धमकी से पूरी तरह से मुक्त हैं। वे इस बात पर कम ध्यान देते हैं कि अतीत में दुनिया उनके बारे में क्या सोचती थी या भविष्य में इसकी प्रतिक्रियाएं क्या होंगी । सभी सत्य अंतरंग है।

इसलिए, भविष्य के इतिहासकारों की सराहना या मनगढ़ंत निर्माण उनके लिए बहुत कम या कुछ भी नहीं का जैसा मतलब होगा। वे एकमात्र हैं जो परम दयालु का प्यार और कृपा चाहते हैं, जो सबसे दयालु जीव है। वह उनका ईश्वर और स्वामी है और उसके साथ अंतिम मुद्दा स्थिर है। यह अतः, हम पर निर्भर है की हम विनम्रता के विषय के साथ उसके सामने झुकें और उसके मार्गदर्शन की तलाश करना ताकि हमारी सभी क्रियाएं उसकी इच्छा के अनुरूप हों। इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि स्थिर रूप से अपनी शाश्वत धुरी पर दुनिया अपने सभी सांसारिक मामलों और कानूनी जटिलताओं के साथ आगे बढ़ना जारी रखेगी। उचित समय पर और अल्लाह की भव्यता की याद में ,इस ग्रह पर बहुसंख्यक लोग हमारे सांप्रदायिक तक़दीर के अनुसार प्रशंसा करना शुरू कर देंगे। इंशा अल्लाह। वो वाला समय होगा, जब हमें अपने बचाव पर होना चाहिए और सांसारिक प्रशंसा पर कम से कम ध्यान देना चाहिए। हमें हमेशा ईश्वरीय आनंद और अनुमोदन जीतने का प्रयास करना चाहिए। यहाँ तक कि सबसे छोटा इशारा ईश्वरीय प्यार और स्नेह का भी हमारी सभी शारीरिक समस्याओं को हल कर सकता है और जो सही है इसके बाद हमारे लिए संग्रह करके, उसे निर्धारित करता है।

यह अनिवार्य है कि जमात उल साहिह अल इस्लाम की महिलाओं को खुद अपने स्वयं के लक्ष्य को स्थापित करना चाहिए। उन्हें इस बात पर कम ध्यान देना चाहिए कि लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं। अपने पति, भाइयों और बहनों की प्रतिक्रियाओं से बेपरवाह होकर। बिना किसी शर्म के हमारे अपने संगठनों की सराहना या अस्वीकृति, उन्हें इस दृढ विश्वास के साथ स्थिर होना चाहिए कि उनके सभी कार्य ईमानदार इच्छा से ईश्वर कि खुशी को जीतने से प्रेरित हैं। वे लोग जो परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाते हैं, वे कभी भी हारे नहीं होते है। आशा है वह हमें अपने दिलों में उसके के लिए गहरे प्यार और स्नेह को उकसाए और वह हमें अत्यंत विनम्रता के साथ उसकी ख़ुशी को पाने की शक्ति दे। आमीन।

[इसके अलावा हुज़ूर (अ त ब अ) ने अपने उपदेश के दौरान कहा: वास्तव में, दोनों पुरुषों और महिलाओं के दिव्य घोषणा के अधिकार हैं जो कि श्रद्धास्पद होने चाहिए। उदाहरण के लिए, अल्लाह आपको पूरे दिन और रात भर दीन के काम करने के लिए नहीं कहता है। याद रखें, आपके अपने शरीर, पति/ पत्नी, बच्चे/ परिवार का आप पर अधिकार है। सब कुछ अच्छी तरह से संतुलित होना चाहिए ताकि आपका

स्वास्थ्य और परिवार (और परिणय कर्तव्यों) जीवन भी बाधित नहीं किया जा सकता है। महिलाओं को अल्लाह के कार्य में अपने पति के कर्तव्यों को मदद करने कि बात को समझने में सक्षम होना चाहिए, लेकिन पुरुषों को भी उनके घर को समझना और देखभाल करना चाहिए। पति और पत्नी दोनों को एक-दूसरे की मदद करने और एक-दूसरे की देखभाल करने कि बात को समझना चाहिए। याद रखें,अल्लाह के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए, हर किसी को जमात बनाने के लिए मदद का एक हाथ बढ़ाना चाहिए। बोझ केवल एक व्यक्ति पर नहीं गिरना चाहिए ।

मुझे याद है कि कन्नूर (केरल - भारत) के हमारे अमीर ने एक बार मुझसे कहा था कि मैं फोन और कंप्यूटर के नकारात्मक प्रभावों पर उपदेश दूँ। वास्तव में, ये नए प्रौद्योगिकियों को अल्लाह के कार्य में काफी हद तक इस्तेमाल किया जा सकता है, जो अल्लाह के संदेश को फैलाने में मदद कर सकता है, लेकिन बहुत बार लोग इन तकनीकों का गलत तरीके से उपयोग करते हैं। इसके अलावा मोबाइल फोन (और सामान्य फोन के साथ-साथ स्मार्टफोन) का लगातार उपयोग और यहां तक कि शेष रूप से कंप्यूटर (और टेलीविजन) के सामने लंबे समय तक रहने से किसी के स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। इसलिए, एक उचित संतुलन का उपयोग करना चाहिए जब इन उपकरणों का इस्तेमाल दिव्य संदेश को फैलाने के लिए किया जाना चाहिए । इन तकनीकों का दुरुपयोग (उनमें से बहुत ज़्यादा) आपके स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसीलिए, मैं व्यक्तिगत रूप से पिछले सालों को पसंद करता हूं - तीस से चालीस साल पहले - जब जीवन बहुत शांतिपूर्ण और सम्मानजनक था और हमारे पास खुद को संवाद / व्यक्त करने के लिए हमारे कलम और कागज थे और इन आधुनिक प्रौद्योगिकियों के हानिकारक प्रभावों के संपर्क में नहीं थे।]

मैं आपके ध्यान में कुछ महत्वपूर्ण मामलों को लाना चाहता हूं जो मुख्य रूप से हमारे समुदाय (जमात) के दोनों वर्गों के पुरुषों और महिलाओं को चिंतित करते हैं। शुरुआत के लिए, मैं महिलाओं को बुलाना चाहूंगा वर्तमान स्थिति में एक सामान्य तत्त्वज्ञान का व्यायाम अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए करना चाहिए। सच्चाई यह है कि ख़ास गुण अपने आप में एक मंज़िल नहीं है। बल्कि यह यात्रा के अंत की ओर एक प्रस्थान बिंदू है। गुण कभी स्थिर नहीं होता। यह एक जीवंत चक्र के रूप में संचालित होता है और निरंतर गति से ही इस मुद्रा को बनाए रख सकते हैं। एक बार इसका आध्यात्मिक घूमना बंद हो जाता है, तो यह एक गुण के रूप में परिभाषित किया जाना बंद हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है उस ख़ास गुण को लगातार ढाला जाना चाहिए और नए गुण और महानुभाव को अनगिनत में गुणा किया जाना चाहिए। यह हमारे धार्मिक / सामाजिक संगठनों पर निर्भर है की उन लोगों के लिए आध्यात्मिक उन्नति के नए रास्ते बनाएँ जो बुरे तरीकों को दूर करने के लिए थोड़ी सी भी हृदय परिवर्तन दिखाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को उनकी समस्याओं को हल करने के लिए सही दिशा निर्देश प्रदान किया जाना चाहिए।

सभी युवा लड़कियों और अन्य महिलाएं जो घूंघट (हिजाब या निकाब) को अपनाती हैं, वे किसी तीसरे पक्ष की आलोचना से डरती नहीं हैं, जिनकी नैतिकता बरकरार रहेगी क्योंकि वे इस्लाम की शिक्षाओं को महत्व देतीं हैं। उन्हें घूंघट का पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन यह अल्लाह

के लिए उनके प्यार और समर्पण को ध्यान में रखकर व्यक्तिगत निर्णय होना चाहिए। इतना कहकर, मैं यह नहीं कह रहा हूं कि दिव्य अभिव्यक्ति की महिलाओं को उनके सिर और शरीर के आकार को उजागर करने देना चाहिए। नहीं! उन्हें अपना सिर बाल और शरीर को ठीक से ढकना चाहिए, उन्हें सभ्य कपड़े पहनने चाहिए। आज मैं जो बात कर रहा हूं वह महिलाओं के परदे के बारे में है जो आजीवन अबाया / जिलबाब (लंबी पोशाक/ ओवरकोट आमने परदे के साथ या हिजाब (सिर के कवच) केवल पहनने से संबंधित है। जो घूंघट करने को मजबूर हैं वे घूंघट को जेल के रूप में देखेंगे, जबकि जो लोग अल्लाह की आज्ञाओं को समझते हैं और उन्हें स्वतंत्र रूप से लागू करेंगें, बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती के और अल्लाह पर गहरी आस्था कभी भी सदाचार और अच्छे व्यवहार का प्रतीक होगा। अल्लाह महिलाओं से क्या आकांशा करता है कि वे हमेशा सभ्य हों और खुद को ढंग से ढकें रहें। उन लोगों के लिए जो अल्लाह के इस आज्ञा की पूर्ति में अतिरिक्त सावधानी बरतते हैं, वे जो इससे अधिकतम लाभ प्राप्त करेंगे, ऐसा ही इस जीवन और उसके बाद में होगा।

वे वो लोग हैं जो ईश्वरीय इच्छा और उद्देश्य के साथ खुद की पहचान करने के लिए एक निर्णायक कदम उठाते हैं। अगर इस महत्वपूर्ण मोड़ पर हमारे जमात की महिलाएं उनके समकक्षों (यानी दूसरी महिलाओं) को आगे के बलिदानों के लिए रास्ता दिखती है ;उनके सामाजिक कल्याण के लिए पर्याप्त व्यवस्था बनाती है और उनमें भ्रात्रीय-कार्यों में सहयोग करने की पारस्परिक भावना को पैदा करना चाहिए तब यह अच्छाई का एकल कार्य उनके लिए अनेक गुना लाभ का एक स्रोत बन जाएगा। इस दुनिया में और उसके बाद भी, समय के साथ ये आध्यात्मिक लाभ माप से परे गुणा होंगे।

मैं यहां अभी के लिए रुकता हूं। आशा है अल्लाह, इंशा-अल्लाह मुझे अगले शुक्रवार को इसी विषय पर प्रदर्शनी जारी रखने के लिए तौफीक दे। आशा है अल्लाह आपको ज्ञान प्रदान करे और इस उपदेश को समझने की समझ दे और सलाह आपके लिए आपके कल्याण के लिए दी गई है।

इंशा-अल्लाह, आमीन।